राम चमक रहे भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
एवं अन्तर्गत संस्थाओं के कार्यालयों के पते व सम्पर्क सूत्र

श्री अ.भा.सा. जैन संघ
केन्द्रीय कार्यालय -
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर-334001 (राज.)
✆ 0151-2270261, 2620359
E-mail : ho@sadhumargi.com

आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र
धार्मिक एवं शैक्षणिक केन्द्र
राणाप्रताप नगर, पद्मिनी मार्ग, पो. उदयपुर (राज.)
✆ 0294-2490717, 2490306
E-mail : udpr@sadhumargi.com
asndkudaipur2018@gmail.com

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति
प्रधान कार्यालय -
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग
गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर-334001 (राज.)
✆ 0151-2270261, 2270262
E-mail : ms@sadhumargi.com

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
प्रधान कार्यालय
समता परिसर, मोहन टॉकीज के पास,
हाटीराम दरवाजा, पो. रतलाम-457001 (म.प्र.)
✆ 07412-241706
E-mail : samtayuvasandesh@gmail.com
samtabhawan21@gmail.com

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
आंचलिक कार्यालय
अरिहन्त अपार्टमेन्ट, रूम नं . बी-1 ए एन.एन.दत्ता रोड़,
पो. सिलचर जि. कच्छार (असम)
✆ 09435072006
E-mail : gulguliarajesh@yahoo.com

श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ
प्रशासनिक कार्यालय -
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर-334001 (राज.)
✆ 0151-2270261, 2620359
E-mail : samtabhawan21@gmail.com

राम चमक रहे भानु समाना

संघ विवरणिका

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

केन्द्रीय कार्यालय : 'समता भवन' आचार्य श्री नानेश मार्ग, गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर-334401 (राज.)
E-mail: ho@sadhumargi.com, Visit us: www.sadhumargi.com
sadhumargi

|| जय गुरु नाना ||

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु राम ||

साधुमार्गी संप्रदाय के नवम् पट्टधर, रत्नत्रय के महान आराधक, परमागम रहस्यज्ञाता, व्यसन मुक्ति के प्रणेता, उत्क्रांति प्रेरक दीक्षा दानेश्वरी श्रीमद् जैनाचार्य 1008 श्री रामलालजी म.सा.

- परम पूज्य श्रीमद् जैनाचार्य 1008 श्री रामलालजी म.सा. का व्यक्तित्व जैन समाज ही नहीं अपितु जैनेतर समाज में भी अपनी निर्मल संयम-साधना व ओजस्वी प्रवचन के लिए महत्वपूर्ण पहचान रखता है।
- अभ्यस्त मूर्तिकार के समान समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने स्वयं अपने हाथों से सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र से युक्त इस महान व्यक्तित्व को गढ़कर सुसज्जित किया ।
- ''इंगियागारे सम्पन्ने'' सूक्ति को सार्थक करने वाले उत्कृष्ट क्रियाधारी मुनिप्रवर श्री रामलालजी म.सा. को बीकानेर की पुण्य धरा पर फाल्गुन शुक्ला तीज सन् 1992 के दिन, समता विभूति आचार्य श्री नानेश ने युवाचार्य पद प्रदान किया।
- सन् 1990 में आगमों की गहन चर्चा के दौरान संस्कृत और प्राकृत के प्रकाण्ड विद्वान श्री लालचंदजी नाहटा (केकडी) ने आपको, परमागम रहस्य ज्ञाता के विशेषण से अलंकृत किया ।
- आचार्य के दायित्वों का निर्वहन करते हुए, परिषह सहते हुए, लोगों को धर्मोपदेश का अमृतपान कराते हुए, आप देश के 17 राज्यों में हजारों किलोमीटर पद विहार कर चुके है। दक्षिण भारत में तिरूचिरापल्ली तक आपने अपने पदचिहन अंकित किए। दक्षिण व पूर्वांचल में धर्म जागरण का शंखनाद कर आपने इतिहास रचा ।
- आपके नेश्रायरत् 421 चारित्रात्माओं की धर्मदेशना आपके प्रबल धर्मप्रभावना के स्वर्ण पर सुहागा है। आपके कर कमलों से 293 मुमुक्षुओं को जैन भागवती दीक्षा ग्रहण करना भी समीचीन आध्यात्मिक कथानात्मक का एक कीर्तिमान है ।
- इस पंचम आरे में भी, आप अपने जीवन दर्शन से, कठोर संयम साधना से, अपने वैराग्य-प्रधान प्रभावपूर्ण प्रवचन से व्याख्यान स्थल पर ही श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दीक्षा का प्रसंग निर्माण कर व दीक्षा ग्रहण करवाकर, चतुर्थ आरे की पुनरावृत्ति का आभास दिलाते हैं ।
- आपश्री को हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं का गहरा ज्ञान है । ज्योतिष शास्त्र में भी विशेष नैपुण्य है। 43 वर्षों से आप संयम मार्ग के पथिक व मार्गदर्शक है। आज भी सैंकडों शिक्षित युवक-युवतियां मुमुक्षु का बाना पहने आपश्री के मुखारविंद से दीक्षा सूत्र सुनने के लिए करबद्ध खड़े हैं। हर श्रावक-श्राविका ज्ञानवान् क्रियावान बने यही आपका प्रयास व आह्वान है।

विविध आवेदन प्रपत्र

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की विविध प्रकार की सदस्यता, विविध प्रवृत्तियों में अनुदान देने संबंधी एवं अन्य सहायता हेतु निर्धारित प्रपत्रों का विवरण निम्नानुसार है, इन प्रपत्रों को संघ की वेबसाईट (www.sadhumargi.com) से सीधा डाउनलोड किया जा सकता है या केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

1. संघ शिखर सदस्यता
2. संघ महाप्रभावक सदस्यता
3. भगवान महावीर समता संस्कार सदस्यता
4. विहार सेवा संयोजन सदस्यता
5. संघ आजीवन / संघ साधारण सदस्यता
6. श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता
7. साहित्य आजीवन सदस्यता
8. समता जनकल्याण प्रन्यास (चिकित्सा सहायता हेतु)
9. छात्रवृत्ति सहयोग
10. आचार्य श्रीश्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना
11. समता मिति सहयोग
12. दानपेटी योजना
13. इदं न मम (यह मेरा नहीं है) कोष
14. समता प्रचार संघ
16. समता संस्कार शिविर
17. समता संस्कार पाठशाला
18. समता बुक बैंक
19. स्वाध्यायी गुणवत्ता विकास (पत्राचार पाठ्यक्रम)
20. जैन संस्कार पाठ्यक्रम
21. श्री धार्मिक परीक्षा बोर्ड
22. पंचवर्षीय श्रुत आराधक पाठ्यक्रम
23. श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर
24. पी.जी. बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास, रतलाम
25. श्री नानेश निकेतन, रतलाम
26. आचार्य श्री नानेश चिकित्सालय, रतलाम
27. परिवारांजलि
28. विद्वत निर्माण प्रकल्प / उत्क्रान्ति भवन, उदयपुर
29. आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार
30. आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार
31. स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार
32. सेठ चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार

- आचार्य श्री ने अपने सामाजिक चिंतन, उद्बोधन एवं प्रेरणा से –

  – सिरीवाल समाज को हिंसा के त्याग का संकल्प करवाकर उनके जीवन का उत्थान किया ।

  – युवाओं एवं विद्यार्थियों को व्यसनमुक्ति का संकल्प दिलाकर ''रामगुरु का है संदेश, व्यसन मुक्त हो सारा देश'' इस उक्ति को चरितार्थ किया।

  – गुणोत्कीर्तन जैसी विचारधारा का सूत्रपात किया ।

  – सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु एक–उत्क्रांति का प्रादुर्भाव किया ।
- आपश्री के भक्त प्रेमी अनुयायी भारत देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अच्छी संख्या में हैं । आपके चातुर्मास में प्रतिवर्ष 300 से 400 गृहस्थ लोच करवाते हैं। लोच का ऐसा आंकडा अन्य चातुर्मास में देखने को नहीं मिलता । आपके चातुर्मास में आश्चर्यजनक अपूर्व तपाराधना का वातावरण देखने को मिलता है ।
- आपश्री के मार्गदर्शन में भूमिगत बीज से गगनचुंबी वटवृक्ष तक पहुँचने की संघर्षशील यात्रा करता हुआ ''साधुमार्गी समुदाय'' निरंतर अग्रसर हैं, उसी प्रकार श्री संघ भी चहुँमुखी विकास में ज्ञान दर्शन चरित्र एवं तपाराधना में गतिशील है।

  श्री संघ की युवा भुजा श्री अ.भा.सा. समता युवा संघ आचार्य प्रवर का अनुपम संदेश समस्त साधुमार्गी परिवारों तक पहुंचाने में सक्रियता, सजगता, समर्पणा दर्शाते हुए नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है ।

परिप्रेक्ष्य

महावीर परम्परा के पंचम गणधर आचार्य सुधर्मा स्वामी के 74वें पाट पर आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. विराजमान हुए थे। आपकी अनुपम विरासत के मूर्तरूप एवं श्रमण परम्परा में विशुद्ध संयम पालन के स्थायीकरण के उद्दिष्ट से श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ आसोज सुदी 2 संवत् 2019 तद्नुसार 30 सितम्बर, 1962 को संस्थापित हुआ।

- हुक्म संघ का उत्तरावर्तन संघ के लोगो (Logo) की नवाक्षरी में प्रतीकात्मक स्वरूप से अंकित है। हुक्म संघ के नौ तपस्वी, ओजस्वी आचार्य भगवंतों ने जिनशासन को गौरवान्वित कर जन-जन को धर्म एवं संस्कार से आप्लावित किया।
- वर्तमान में 82वें पाट पर विराजमान विद्यमान नवम् आचार्य श्री रामलालजी म.सा. अपने आचार के पावित्र्य व विचार के गांभीर्य से, अपने नैश्रायरत 421 चारित्रात्माओं की धर्मदेशना से, जिनशासन की अभूतपूर्व प्रभावना कर रहे है। आपके करकमलों से 293 मुमुक्षुओं को जैन भागवती दीक्षा प्रदत्त की गई। आपने हिंसात्मक सिरीवाल समाज को व्यसनमुक्त एवं संस्कारी जीवन जीने हेतु प्रेरित किया। देशव्यापी आंदोलन व संघर्ष कर अनेकों युवाओं को व्यसनलिप्तता से छुटकारा दिलाया।

संघ के प्रशासनिक केन्द्र

- संघ के प्रशासनिक कार्यों एवं प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन में दो अंतर्गत संस्थाएँ सहायक हैं- 1. श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति, 2. श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ।
- **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति :** जिस समाज की महिलाएँ सुसंस्कारित एवं शिक्षित होंगी वह समाज निश्चय ही प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगा। इसी नीति वाक्य को लेकर संघ द्वारा महिला प्रकोष्ठ के रूप में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की स्थापना वर्ष 1966 में की गई। इसका प्रधान कार्यालय बीकानेर में स्थित है। सम्प्रति 8000 सदस्याएँ हैं एवं 180 स्थानीय महिला मंडल सक्रिय रूप से गतिशील हैं।
- **श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ:** किसी भी संघ के चहुँमुखी विकास में युवा वर्ग का विशेष योगदान रहता है। युवा वर्ग को धर्म से जोड़ते हुए नई दिशा एवं नया सोच उनमें विकसित हो इसी भावना से संघ द्वारा श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ की स्थापना वर्ष 1979 में की गई। इसका प्रधान कार्यालय रतलाम में स्थित है। युवा संघ द्वारा अपने सदस्यों के मध्य सतत् संवाद स्थापित रखने के उद्देश्य से 'समता युवा संदेश' पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है।

प्रशासनिक केन्द्र, उदयपुर

नानेश निकेतन, रतलाम

- बीकानेर में स्थित केन्द्रीय कार्यालय से संघ के समस्त प्रशासनिक कार्य प्रबंधित होते है। साथ ही संघ की कई महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों का संचालन भी इस कार्यालय से होता है।
- उदयपुर स्थित आचार्य श्री नानेश ध्यान केन्द्र से संघ की शैक्षणिक एवं धार्मिक गतिविधियों का संचालन होता है।
- संघ के अन्य कार्यालय दिलीप नगर, रतलाम से प्रबंधित नानेश निकेतन प्रकल्प के अंतर्गत धर्मपाल- सिरीवाल प्रवृत्ति नानेश निकेतन परिसर में विहार सेवा दल ट्रेनिंग सेन्टर का भी केन्द्र है ।

धार्मिक प्रवृत्तियाँ

- **समता संस्कार पाठशाला :** यह संघ का प्रमुख प्रकल्प (Flagship Project) माना जाता है। सुसंस्कारित बालकवृंद समाजोत्थान की आधारशिला है। बच्चों में संस्कार निर्माण के उद्देश्य से देशभर में विभिन्न केंद्रों पर दैनिक व साप्ताहिक पाठशालाएं संचालित की जा रही हैं। 200 पाठशालाओं में 5382 .अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के हितार्थ 334 शिक्षिकाएं अपनी सेवाएं प्रदान कर रही हैं। शिक्षार्थियों को तत्वज्ञान से भी परिचित कराया जाता है; वे संघ द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित धार्मिक परीक्षाओं में भी भाग लेते हैं। पाठशाला उपक्रम को विस्तृत व विकसित करने की दृष्टि से एक अभिनव परियोजना – “Know & Grow” संकल्पित हुई है। जैन तत्वों की सीख देने हेतु यह एक पुस्तक स्वरूप सुरुचिपूर्ण व सुबोधगम्य पठनसामग्री है।
- **समता संस्कार शिविर :** संघ द्वारा बालक–बालिकाओं के चारित्र निर्माण हेतु प्रतिवर्ष सम्पूर्ण देश में क्षेत्रीय एवं स्थानीय समता संस्कार शिविरों का आयोजन किया जाता है। इन शिविरों के माध्यम से बालक–बालिकाओं को जैन धर्म का प्रारम्भिक ज्ञान कराया जाता है साथ ही उन्हें व्यसनमुक्त एवं संस्कारयुक्त जीवन जीने की विशेष प्रेरणा दी जाती है। प्रतिवर्ष लगभग 8 से 10 हजार बालक–बालिकाएँ समता संस्कार शिविरों में भाग लेते हैं।
- **समता प्रचार संघ :** इस प्रवृत्ति का उद्‌भव समता विभूति परम श्रद्धेय स्व. आचार्य प्रवर श्री नानालालजी म.सा. की सद्प्रेरणा से उदयपुर में सन् 1978 में हुआ। प्रवृत्ति का उद्देश्य समता सिद्धान्त को जन–जन तक पहुँचाने का रहा है। स्वाध्यायियों को तैयार करने के लिए समय–समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करना, पर्युषण पर्वाराधन के पावन प्रसंग पर अधिकाधिक क्षेत्रों में धर्माराधना कराना इस प्रवृत्ति के मुख्य कार्य हैं। वर्तमान में प्रतिवर्ष लगभग **500 स्वाध्यायी** समता प्रचार संघ के माध्यम से लगभग **200 स्थलों** पर स्वाध्यायी सेवा देते हैं।

समता संस्कार पाठशाला

समता संस्कार शिविर

स्वाध्यायी शिविर

शैक्षणिक प्रवृत्तियाँ

- **धार्मिक परीक्षा बोर्ड :** इसका प्रमुख उद्देश्य मुमुक्षु आत्माओं व चारित्रात्माओं में सम्यक् ज्ञान की अभिवृद्धि करना है। इस परीक्षा में प्रतिवर्ष लगभग 200 मुमुक्षु एवं चारित्रात्माएँ भाग लेती हैं। इसमें जैन सिद्धान्त भूषण, कोविद, विशारद, शास्त्री, विभाकर आदि अनेक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है।

- **जैन संस्कार पाठ्यक्रम :** बालक–बालिकाओं, युवक–युवतियों एवं श्रावक–श्राविकाओं को जैन धर्म का प्रारम्भिक ज्ञान देते हुए उत्तरोत्तर आगम एवं तत्त्व ज्ञान से परिचित कराने के लक्ष्य से संघ द्वारा जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा का आयोजन विगत कई वर्षों से किया जा रहा है। संघ द्वारा इन परीक्षाओं के आयोजन हेतु जैन संस्कार पाठ्यक्रम पुस्तिकाएं भाग–1 से 12 तक प्रकाशित की जा चुकी हैं । प्रतिवर्ष लगभग 304 परीक्षा केन्द्रों पर 5631 से अधिक परीक्षार्थी भाग लेकर जैन धर्म एवं दर्शन का ज्ञान प्राप्त करते हैं। जैन संस्कार पाठ्यक्रम की पुस्तकें भाग 1–12 हिन्दी में उपलब्ध है अथवा भाग 1–5 गुजराती में भी उपलब्ध है ।
- **समता बुक बैंक :** महाविद्यालय स्तरीय एवं उच्च तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने वाले जैन छात्रों को पाठ्य पुस्तकें सहज उपलब्ध कराने हेतु समता बुक बैंक, उदयपुर की स्थापना की गई है। समता बुक बैंक से कला, वाणिज्य, विज्ञान, सी.ए., सी.एस, एम.बी.ए, एमबीबीएस, आई.टी. एवं इसी प्रकार के अन्य उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम हेतु पुस्तकें उपलब्ध कराई जाती हैं। प्रतिवर्ष लगभग 300 छात्र इस बुक बैंक से लाभान्वित होते हैं। वर्तमान में पुस्तकालय में 1850 पुस्तकें है।
- **आगम, अहिंसा–समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर :** जैन विद्या अध्ययन के विकास के परिप्रेक्ष्य में यह एक प्रमुख प्रवृत्ति है। प्राकृत एवं जैन धर्म व संस्कृति विषयक संगोष्ठियों का आयोजन, शोधलेखों का प्रकाशन, तथा ग्रंथों का अनुवाद व प्रकाशन, संस्थान के सेवा कार्यों का विशिष्ट आयाम है। संस्थान का एक वृहत् पुस्तकालय है जिसमें जैन बौद्ध तथा वैदिक परंपरा से संदर्भित 8952 पुस्तकें एवं 1556 हस्तलिखित पाण्डुलिपियां संग्रहित हैं। संस्थान द्वारा प्राकृत व्याकरण, 3 शोध ग्रंथों एवं 10 प्रकीर्णक ग्रंथों का प्रकाशन किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग द्वारा स्वीकृत व निर्धारित पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी संस्थान द्वारा प्रकाशित हुई हैं।
- **स्वाध्यायी गुणवत्ता विकास कार्यक्रम :** संघनिष्ठ श्रावक–श्राविकाओं, स्वाध्यायियों एवं मुमुक्षुओं को घर बैठे पत्राचार पद्धति से जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, आगम सम्मत धारणाओं एवं थोकड़ों का मौलिक ज्ञान कराने के उद्देश्य से संघ द्वारा वर्ष 2008 में स्वाध्यायी गुणवत्ता विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया । इस त्रि–वर्षीय पत्राचार पाठ्यक्रम के प्रत्येक सत्र में लगभग 400 परीक्षार्थी भाग लेते हैं।

भाग 1 से 12 तक

समता बुक बैंक

ग्रन्थालय

सोलर ऊर्जा

श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर (राज.)

- **श्री गणेश जैन छात्रावास :** इसकी संस्थापना शांतक्रांति के अग्रदूत स्व. आचार्य श्री गणेशलालजी म.सा. की पुण्यस्मृति में 01 अगस्त 1964 को हुई थी। छात्रावास का प्रयोजन केवल आवासीय व भोजन सुविधा उपलब्ध कराना नहीं था, अपितु जैन समाज के छात्रों को सुसंस्कारित, धर्मानुरागी व व्यावहारिक दृष्टि से समुन्नत बनाना भी था। अबतक हजारों छात्र इसकी सुविधाओं से लाभान्वित हो चुके हैं ; उनके चरित्र निर्माण में भी छात्रावास ने अपनी भूमिका निभाई है। संप्रति निवासरत 107 छात्रों में इंजीनियर, सी.ए., एम.बी.ए., बी.कॉम. इत्यादि संव्यावसायिक (Professional) कोर्स के विद्यार्थियों की समाविष्टि है। हाल ही में छात्रावास परिसर में 200 विद्यार्थियों की क्षमता–युक्त नवीन, आधुनिक, भोजनशाला का निर्माण हुआ हैं।

- **विद्वत् निर्माण प्रकल्प :** यह योजना संघ द्वारा वर्ष 2009 में प्रारम्भ की गई है। यहाँ बालकों को व्यावहारिक शिक्षा के साथ ही धार्मिक शिक्षा का प्रस्तावित प्रकल्प विशेष रूप से चयनित छात्र को संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का प्रारंभिक अध्ययन करवाया जाएगा है। इस प्रकल्प में 50 छात्रों के लिए आवासीय सुविधा उपलब्ध है।
- **श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम :** यह अप्रतिम ज्ञान भण्डार लगभग 75000 से अधिक पुस्तकों व दुर्लभ ग्रंथों से सुसज्जित है। अनेक हस्तलिखित पाण्डुलिपियां भी यहां संग्रहित हैं। इस केन्द्र से चारित्रात्माओं, मुमुक्षुओं व स्वाध्यायियों के ज्ञानार्जन हेतु पठन–सामग्री उपलब्ध कराने का गुरुतर कार्य संपन्न होता है। भण्डार में संग्रहित व संरक्षित सभी पुस्तकों का कम्प्यूटरीकरण हो चुका है, जिसके चलते पुस्तकों के वितरण व व्यवस्थापन का कार्य सुगम व सुनियोजित हुआ है। भण्डार का संचयन जैन समाज की अनमोल धरोहर है। इस प्रवृति की प्रगति, स्वाध्याय व जैन विद्या में रूचि उजागर करने के पुनीत प्रयासों में संघ के योगदान की गौरवगाथा है।
- **पूज्य आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना :** आचार्य श्री की पावन प्रेरणा से परिकल्पित एवं आपश्री की स्मृति को समर्पित यह उच्च शिक्षा योजना स्वधर्मी मेधावी व महत्वाकांक्षी विद्यार्थियों हेतु विशेषकर जो धनाभाव के कारण उच्च शैक्षणिक सुविधाओं व अवसरों से वंचित रह जाते हैं, एक वरदान स्वरूप है। इस योजना के अंतर्गत जो अब संघ की अभिनव प्रवृत्ति के रूप में आरंभ की गई है, स्नातक/ स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए प्रतिभावान विद्यार्थियों को ब्याज–मुक्त अर्थ सहयोग उपलब्ध कराया जाता है । स्वदेश एवं विदेश के मान्यता प्राप्त शिक्षण केन्द्रों में प्रवेश–प्राप्ति के पश्चात् यथोचित अर्थ सहयोग प्रदत्त होता है। योजना के कार्यान्वयन व संचालन हेतु एक प्रबंधन समिति गठित हुई है । देश और विदेश में पढ़ने वाले 100 छात्र–छात्राओं को ब्याज मुक्त ऋण सहयोग दिया जा चुका है ।

पूज्य आचार्य श्री श्रीलालजी उच्च शिक्षा योजना

SBI

उच्च शिक्षा योजना हेतु स्टेट बैंक के साथ MOU Sign. करते हुए SBI के मेनेजिंग डायरेक्टर – श्री रजनीशकुमार

साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

- **श्रमणोपासक :** यह हिंदी पाक्षिक संघ का मुखपत्र व प्रतिनिधिक विचार वाहिनी है जो संघ स्थापना के समकालीन विगत 56 वर्षो से अविरल प्रकाशित हो रहा है। पत्रिका में आचार्य भगवंतों के दिव्य प्रवचन व अमृतवाणी, जैन धर्म व दर्शन संदर्भित लेखन, संघ संबंधी सूचना, तथा अन्य नैतिक, मूल्य–आधारित, उत्प्रेरक व प्रेरणास्पद स्तंभ प्रस्तुतियों की समाविष्टि होती है। अपने रूचिपूर्ण चित्तरंजक विषय–वस्तु के कारण 'श्रमणोपासक' जनप्रिय तो है ही, साथ ही विवेकपूर्ण पाठक इसे समाज में जागृति व परिवर्तन के उद्दीपक के स्वरूप में आंकते हैं। वर्तमान में 'श्रमणोपासक' के 21000 से अधिक आजीवन अभिदाता सदस्य हैं।

पाक्षिक पत्रिका

- **साधुमार्गी पब्लिकेशन :** संघ द्वारा जैन धर्म, दर्शन, आगम, कथा एवं प्रवचन से संदर्भित साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। सत्साहित्य का प्रकाशन संघ की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है। आचार्य श्री नानेश रचित अमर कृति, जिणधम्मो, समता दर्शन व्यवहार (गुजराती, हिन्दी, मराठी, बंगाली, अंग्रेजी संस्करण) में अनूदित हो चुके है ।
- **आगम एवं तत्व प्रकाशन समिति :** संघ द्वारा जैन धर्म, दर्शन, आगम, कथा एवं प्रवचन से संदर्भित साहित्य का प्रकाशन किया जाता है। सत्साहित्य का प्रकाशन संघ की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है।

साधुमार्गी पब्लिकेशन

सामाजिक/चिकित्सा एवं आरोग्य प्रवृत्तियाँ

- **समता जनकल्याण प्रन्यास :** ऐसे स्वधर्मी भाई बहनों को, जो असाध्य बीमारी से ग्रसित हों परन्तु चिकित्सा व्यय वहन करने में असमर्थ हों समता जन कल्याण प्रन्यास द्वारा चिकित्सा हेतु अर्थ सहयोग प्रदान किया जाता है।
- **भगवान महावीर समता चिकित्सालय, डोण्डीलोहारा :** छत्तीसगढ़ के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में इस चिकित्सालय की स्थापना वर्ष 1999 में हुई। वर्तमान में यह चिकित्सालय वार्मर मशीन, एक्स–रे सुविधा, पैथोलॉजी लेब, प्रसूति गृह एवं ऑपरेशन थियेटर आदि से सुसज्जित है। चिकित्सालय परिसर में भोजनालय एवं जल–मंदिर का संचालन भी किया जा रहा है। हजारों व्यक्ति इस चिकित्सालय से लाभान्वित हो चुके हैं।
- **नेत्र चिकित्सा शिविर :** संघ द्वारा प्रतिवर्ष वृहद् नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाता है। हजारों नेत्र रोग पीड़ितों का उपचार इस प्रकार के शिविरों में किया जा चुका है।

नेत्र चिकित्सा शिविर

- **धर्मपाल-सिरीवाल प्रवृत्ति :** समता विभूति आचार्य श्री नानालालजी म.सा. ने मालवा प्रान्त में विचरण करते हुए देखा कि वहाँ की बलाई जाति के लोग कुरीतियों से घिरे हुए थे एवं अनेक दुर्व्यसनों से ग्रसित थे। ऐसे लोगों को आचार्य भगवन ने शाकाहार, व्यसनमुक्ति एवं सुसंस्कार अपनाने हेतु विशेष उद्बोधन दिया। जिससे प्रभावित होकर मालवा क्षेत्र के सैंकड़ों गांवों के लाखों लोगों ने व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। इन्हें आचार्य भगवन ने धर्मपाल के नाम से संबोधित किया। आचार्य श्री नानेश द्वारा उद्घोषित धर्मपाल प्रवृत्ति के समानान्तर वर्तमान आचार्य प्रवर श्री रामेश ने राजस्थान के मेवाड़ प्रान्त की जनजाति बावरी समाज के व्यक्तियों को, जो हिंसक गतिविधियों में लिप्त थे, कुव्यसनों को छोड़कर संस्कारित जीवन जीने की प्रेरणा दी। आचार्य भगवन् ने इन्हें सिरीवाल नाम से संबोधित किया। नानेश निकेतन रतलाम द्वारा धर्मपाल-सिरीवाल प्रवृत्ति का सुचारू संचालन हो रहा है । लोगों को संस्कारित जीवन जीने की प्रेरणा देने हेतु बहुआयामी कार्य किये जा रहे हैं।
- **नानेश चिकित्सालय, रतलाम :** संघ के चिकित्सा एवं आरोग्य प्रवृत्तियों की श्रृंखला में नानेश चिकित्सालय रतलाम एक अभिनव कड़ी है। धर्मपाल बंधुओं एवं अन्य जनों के सेवार्थ तथा उपचारार्थ नानेश निकेतन परिसर रतलाम में नानेश चिकित्सालय का शुभारंभ 10 जनवरी 2016 को किया गया। चिकित्सालय में अन्य आवश्यक सुविधाएं जैसे ईसीजी (ECG), रूग्णवाहिनी (Ambulance) इत्यादि उपलब्ध करवाने हेतु संघ प्रयासरत है। यह सेवा प्रकल्प तात्कालिक सफलता (Instant Success) व जनप्रियता हासिल कर चुका है। उपचार के साथ साथ निःशुल्क औषध की भी सेवा मरीजों को उपलब्ध कराई जाती है।
- **भिलाई चिकित्सालय, भिलाई :** भिलाई में एक अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित चिकित्सालय है । सभी प्रकार की चिकित्सा, दवा निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है ।

नानेश चिकित्सालय, रतलाम

अनन्य महोत्सव 2020

आचार्य श्री नानेश जन्म शताब्दी पूर्व तैयारी

- **श्रुत आराधक :** श्रावक-श्राविका ज्ञानवान बने, क्रियावान बने तथा ज्ञान ध्यान में उनकी अभिरूचि बढ़े, इस उद्देश्य को लेकर 'श्रुत आराधक' पाठ्यक्रम रचा गया है । सन् 2020 तक, जो पूज्य आचार्य स्व. श्री नानालालजी म.सा. की जन्म शताब्दी वर्ष (Centenary Year) के रूप में मनाया जाएगा, उत्तम ज्ञान ध्यान वाले श्रावक वर्ग तैयार करने का लक्ष्य है ।
- **परिवारांजलि :** जन्म शताब्दी वर्ष के ही परिप्रेक्ष्य में पंच सहस्त्री श्रद्धाभिषिक्त परिवारांजलि नामक महायज्ञ आयाम स्वरूप गुरू भगवन द्वारा प्रदत्त हुआ है । जिसके अंतर्गत साधुमार्गी परिवारों को व्रत ग्रहण आह्वानित है । एक नवम् अंजलि ''संस्कार संवर्धन अंजलि'' गुरुदेव द्वारा प्रदत्त एक अभिनव आयाम है ।
- **अन्य अभिनव सेवाएं :** श्री अ.भा.सा. जैन द्वारा प्रदत्त ''विहार भक्ति परिवार – संत भक्ति परिवार'' यह दो अभिनव सेवा प्रवृतियाँ आरंभ की गई है ।
- **आगम भक्ति :** संघ के प्रत्येक श्रावक-श्राविका से अपेक्षित है कि वे आगम के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त करें । सूत्रों गाथाओं का स्वाध्याय करें तथा प्रमुख थोकड़े आदि कंठस्थ करें ।
- **उत्क्रान्ति :** जैन धर्म का उद्‌भव समाज में व्याप्त हिंसा, अनाचार, प्रदर्शन, पाखण्ड और कर्म काण्ड के निवारण हेतु एक उत्क्रान्ति के रूप में हुआ था। तथापि समय के प्रहार से और संसर्ग दोषों से, श्रेष्ठ जैन समाज में भी कतिपय सामाजिक कुरीतियों का समावेश हुआ। दहेज, वैभव, प्रदर्शन, तपस्या में भी आडम्बर, शादी विवाह पर फिजूलखर्ची , भोंडे प्रदर्शनी आदि कुरीतियों से जैन समाज अछूता नहीं रहा। ऐसे समय में चर्तुविध संघ के नवम् नक्षत्र पूज्य आचार्य श्री रामलालजी म.सा. ने इन कुरीतियों के उन्मूलन हेतु ''उत्क्रान्ति एक संकल्प'' के रूप में आज से दो वर्ष पूर्व बैंगलोर चार्तुमास में संघ पर महती कृपा का वर्षण करते हुए एक आयाम प्रदान किया।

आगम भक्ति

संघ समृद्धि योजनाएँ

- **दानपेटी योजना :** संघ की समस्त प्रवृत्तियों में लोगों की सहभागिता सुलभ हो इस हेतु संघ द्वारा दानपेटी योजना का शुभारम्भ किया गया। संघनिष्ठ परिवारों ने दानपेटी अपने यहाँ लगा रखी है जिसमें वो प्रतिदिन अपना अंशदान संघ विकास के लिए देते हैं।
- **संघ सदस्यता अभियान :** संघ प्रभावक, महाप्रभावक एवं शिखर सदस्यता अभियान के साथ ही संघ के आजीवन सदस्य, साहित्य सदस्य एवं श्रमणोपासक सदस्य आदि में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि हो रही है।
- **इदं न मम् (यह मेरा नहीं है) :** श्री अ.भा.सा. जैन संघ की विभिन्न प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु एक अभिनव प्रतिबद्धता की मिसाल एवं अर्थ सौजन्य का माध्यम प्रस्तावित हुआ है। दानदाताओं ने अपनी आय का निर्धारित भाग आजीवन नियमित रूप से संघ को समर्पित करने का संकल्प लिया है। इस समर्पण भाव की अभिव्यक्ति को ''इदं न मम्'' (यह मेरा नहीं है) के रूप में साकार किया गया है।

विशिष्ट प्रवृत्तियाँ

- **वीर सेवा समिति :** वीर सेवा समिति का मुख्य लक्ष्य हैं कि वीर परिवार की सेवा, सुश्रुषा में संघ अपने दायित्व का निर्वहन करे। इस हेतु बिना ब्याज के ऋण सहायता भी दी जाती है।

- **विहार सेवा समिति :** चारित्रात्माओं के शेखेकाल विहार के समय संघ का विशेष दायित्व बनता है कि उनकी विहार यात्रा में संघ साध्वोचित मर्यादा का पालन करते हुए सहयोगी बने। इस भावना को ध्यान में रखते हुए अपरिचित एवं दूरस्थ क्षेत्रों में विचरणरत् चारित्रात्माओं के साथ जो विहारकर्मी होते हैं उनकी सेवा, सुश्रुषा का दायित्व केंद्रीय संघ वहन करता है। नानेश निकेतन परिसर में विहार सेवा दल ट्रेनिंग सेन्टर केन्द्र की स्थापना की गई है।
- **स्वधर्मी सहयोग :** श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति द्वारा संचालित इस प्रवृत्ति के अंतर्गत जरूरतमंद स्वधर्मी परिवारों को प्रतिमाह आवश्यक सहायता प्रदान की जा रही है।
- **समता छात्रवृत्ति योजना :** श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति द्वारा 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस योजना के अंतर्गत विद्यार्थी का वर्ष भर का शैक्षणिक खर्च दानदाता द्वारा वहन किया जाता है।
- **साधुमार्गी जनगणना :** साधुमार्गी जैन संघ के देशव्यापी परिवारों में परस्पर सम्पर्क किया जा सके, उनके बालक-बालिकाओं की शिक्षा एवं प्रतिभा से सभी अवगत हो सकें, इस हेतु प्रयास जारी है।
- **साधुमार्गी एप :** एप्प द्वारा श्रमणोपासक, साहित्य, पाठशाला, शिविर, विहारचर्या, संघ, युवा संघ, महिला समिति की गतिविधियाँ आदि सहज ही पढ़ सकते है।

1. साधुमार्गी एप्प किसी भी एंड्रोइड फोन या एप्पल फोन के प्ले स्टोर पर जाकर साधुमार्गी लिखकर डाउनलोड कर सकते है।

विहार सेवा समिति

स्वधर्मी सहयोग

साधुमार्गी एप

- **व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण :** आचार्य श्री रामेश का प्रमुख संदेश व्यसनमुक्ति आज के इस आधुनिक युग में अत्यन्त प्रासंगिक है। अब तक इस कार्यक्रम में विद्यालयों, महाविद्यालयों, कारागृहों एवं सार्वजनिक स्थलों पर भाषण, व्याख्यानमाला, प्रदर्शनी एवं रैलियों के माध्यम से लोगों को कुव्यसन त्यागने की उत्प्रेरणा देकर उन्हें व्यसनमुक्त करने का कार्य अनवरत् किया जा रहा है।
- **सेठ घेवरचंद केसरीचंद गोलछा जवाहर स्मृति व्याख्यानमाला निधि :** इस व्याख्यानमाला का उद्देश्य जैन धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में विद्वानों के चिन्तन को जैन एवं जैनेतर वर्ग तक पहुंचाना है। अब तक संघ द्वारा 13 व्याख्यानमालाओं का आयोजन किया जा चुका है जिनमें लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों के भाषण हुए।
- **श्रमणोपासक अभिनंदन संग्रह :** श्रमणोपासक अभिनंदन संग्रह नामक संकलन प्रस्तावित है जो एक संग्रहिक/चित्रावली(एलबम) के स्वरूप में होगा जिसमें भारत में व विदेश में निवासरत सभी साधुमार्गी परिवारों के सदस्यों के छायाचित्र (फोटो) अंतरविष्ट होंगे।
- **समता भवन निर्माण :** श्रावक–श्राविकाएँ धर्माराधना हेतु अपने गाँव/नगर में समता भवनों का निर्माण करवाते हैं। सम्पूर्ण देश में कई स्थलों पर समता भवन निर्मित हैं जहाँ नियमित धर्माराधना होती है तथा संयमी मर्यादा के अनुरूप चारित्रात्माओं का चातुर्मास एवं शेखेकाल में वहाँ बिराजना होता है।

युवा सदस्य सभा में भाग लेते हुए

समता भवन निर्माण

विविध पुरस्कार

संघ द्वारा शिक्षा, सेवा एवं प्रतिभा उन्नयन के क्षेत्र में विविध पुरस्कार दिये जाते हैं–

- **आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार :** आचार्य श्री नानेश की पुण्य स्मृति में इस पुरस्कार की स्थापना की गई। यह पुरस्कार सम्प्रदाय निरपेक्ष दृष्टि से ऐसे व्यक्ति को दिया जाता है जिसने अपने जीवन में समता दर्शन व्यवहार को आत्मसात कर रखा हो। अब तक 8 समता मनीषियों को इस पुरस्कार के अन्तर्गत सम्मानित किया जा चुका है।
- **स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार :** अब तक 20 विद्वानों को इस पुरस्कार के अन्तर्गत उत्कृष्ट जैन साहित्य सृजन के लिए सम्मानित किया जा चुका है।
- **सेठ श्री चम्पालालजी सांड स्मृति प्रतिभा उन्नयन पुरस्कार :** भारतीय प्रशासनिक सेवा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जैन मतावलम्बी को यह पुरस्कार दिया जाता है।
- **आचार्य श्री नानेश जन सेवा पुरस्कार :** यह पुरस्कार उस व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जाता है जिसने सार्वजनिक सेवा के किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए नये कीर्तिमान स्थापित किये हों।

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार (सन् 2010)
श्री दीपचंदजी सावराजजी गार्डी, मुम्बई

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार (सन् 2012)
प्रो. सागरमलजी जैन, साजा

राम चमक रहे भानु समाना

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार (सन् 2015)
सुश्रावक श्री उमरावजी बम्ब, टोंक (Advocate)

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार (सन् 2018)
श्री ओमप्रकाशजी माथुर (राज्यसभा सांसद व रा. उपाध्यक्ष भाजपा)

स्व. सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार (सन् 2012)
IAS श्री जयंतजी बांठिया

स्व. सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार (सन् 2014)
आई.ए.एस. कुलदीपजी रांका

स्व. सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार (सन् 2015)
आई.पी.एस. राजीवजी दासोत
पुलिस महानिर्देशक राजस्थान सरकार, जयपुर

स्व. सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार (सन् 2016)
आई.पी.एस. श्री प्रदीपजी रूनवाल
अतिरिक्त पुलिस महानिर्देशक, म.प्र.)

स्व. सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार (सन् 2017)
आई.पी.एस. मुकेश जैन

स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति पुरस्कार (सन् 2013)
डॉ. श्वेताजी जैन, जोधपुर

आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार (सन् 2014)
महावीर इंटरनेशनल-ऐपेक्स

आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार (सन् 2016)
भारतीय जैन संघटना, पूना

अंतराष्ट्रीय शाखाएँ

- अंतराष्ट्रीय शाखाएँ : **श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ अपनी भुजाएँ केवल भारत में ही नहीं अपितु विदेश में भी फैलाया हुआ है ।**

साल्ट लेक सिटी उताहा (यू.एस.)

दुबई (यू.ए.ई.)

न्यूयार्क (यू.एस.ए.)

काठमांडू (नेपाल)

संघ के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ते कदम । श्री साधुमार्गी जैन संघ मिडल ट्रस्ट, श्री साधुमार्गी जैन संघ (यू.एस.ए.), श्री साधु

श्रीमती एकता देवड़ा, अहमदाबाद ने अमेरिका में स्थित सॉल्टलेक सिटी में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में **स्ट्रेस मैनेजमेन्ट बॉय आचार्य श्री नानेश** पर प्रस्तुतिकरण कर संघ को गौरवान्वित किया ।

संघ प्रभावना समुद्रपार भी आरंभ हो चुकी है, विशेषकर उन देशों में जहां साधुमार्गी परिवार निवासरत हैं । उदाहरणतया, एक नई शाखा "साधुमार्गी जैन संघ मिडल ईस्ट" दुबई में स्थापित हुई । शाखा का कार्यक्षेत्र दुबई, अबू ढाबी, कुवैत, सऊदी अरब, ईरान व ईराक रहेगा ।

बैंकाक में know and grow का पाठ्यक्रम शुरु हो गया है । संघ के शीर्ष पदाधिकारियों के आगामी अमेरिका के प्रवास के दरम्यान विदेश में बसे हुए एक प्रभावशाली वर्ग का संघ से जुड़ाव होने की अपेक्षा है ।

साधुमार्गी जैन संघ, महिला समिति **USA** का भी गठन किया गया । काठमांडू संघ एवं महिला समिति का गठन हुआ ।

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

श्री संघ की यह अंतर्गत संस्था अपना 50 वर्ष का गरिमामय, उपलब्धियों के परिपूर्ण, कीर्तिमानों से विभूषित प्रवास तय करते हुए अपने स्वर्ण जयंति वर्ष में पदार्पण कर चुकी है । आसोज सुदी 3 दिनांक 06 अक्टूबर 1967 को, आचार्य प्रवर नानालालजी म.सा. की दूरदर्शी देशना के फलस्वरूप महिला समिति की संस्थापना हुई थी । दस हजार से अधिक सक्रिय, सेवाभावी, ऊर्जावान महिला सदस्याओं की इस संघटना ने अनेकों बहुविध क्रियाकलापों, अभियानों व आंदोलनों से धर्मप्रभावना को नित नई गतिशीलता व दिशाबोध प्रदान किया ।

महिला चेतना में जागृति, स्वधर्मी सहायता, समता छात्रवृत्ति योजना, महिला सशक्तिकरण, आत्म-निर्भरता व स्वाभिमान हेतु सिलाई प्रशिक्षण, पापड़ उद्योग एवं अन्य योजनांए, दहेज प्रथा, नारी प्रताड़ना, बाल विवाह, भ्रूण हत्या इत्यादि के उन्मूलन हेतु संघर्ष समिति के प्रयासों के फोकस रहे । महिला समिति द्वारा अपनी मुख पत्रिका त्रैमासिक पत्रिका ''प्रबोधिनी'' प्रारंभ की गई है ।

महिला समिति सदस्यगण

युवती समक्षीकरण शिविर

श्री अ.भा.सा. समता युवा संघ

अनन्य महोत्सव 2020 की पूर्व तैयारी में, व तत् संदर्भित विभिन्न परियोजनाओं के क्रियान्वयन में, श्री अ. भा. सा. समता युवा संघ की अहम भूमिका है। साधुमार्गी युवा वर्ग की ऊर्जा, शक्ति, संघनिष्ठा व सक्रियता के बिना इतने विराट प्रकल्प को साकार करना टेढ़ी खीर ही होगा। प्रत्येक साधुमार्गी परिवार को उत्क्रांति परिवार में परिणत करने के आचार्य प्रवर के आह्वान को स्वीकारते हुए युवा संघ ने शताब्दी वर्ष तक कार्य सिद्ध करने का बीड़ा उठाया है।

तेरे पावन चरणों में

रक्तदान शिविर

राम चमक रहे भानु समाना

संघ की सहयोगी संस्थाएँ

- **समता महिला सेवा केंद्र :** विगत तीन दशकों से इस सेवा केंद्र के तत्वावधान में अनेकों महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराकर कई प्रकार/आकार के पापड़ तथा भिन्न भिन्न मसालों का उत्पादन किया जाता है। उत्पाद की गुणवत्ता व शुद्धता क्रेताओं व ग्राहकों द्वारा मान्य व अभिस्वीकृत है। जरूरतमंद महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु एवं उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र करने की दिशा में एक ठोस चरण स्वरूप यह प्रकल्प आरंभ हुआ था। महिलाओं को विविध व्यवसायों में रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलंबी होने की, व सम्मानपूर्वक जीवन जीने की, उत्प्रेरणा प्रदान की जाती है।

  सेवा केंद्र के व्यवसाय में वृद्धि हेतु व उत्पाद के विविधिकरण हेतु सारभूत व सुनियोजित उपक्रम प्रस्तावित हैं तथा विपणन (Marketing) हेतु क्षेत्रवार Dealer/Retailer की नियुक्ति भी विचाराधीन है।

समता महिला सेवा केंद्र

समता पापड़ रिटेल आउटलेट

- **श्री आदिनाथ पशुरक्षण संस्थान, कानोड़ :** भगवान महावीर की अमृतवाणी 'जीओ और जीने दो' को आत्मसात् करते हुए संघ द्वारा अनेक गौशालाओं एवं जीवदया केन्द्रों को सहायता दी जाती है। कानोड़ स्थित श्री आदिनाथ पशुरक्षण संस्थान नामक गौशाला का संचालन संघ द्वारा किया जा रहा है। इस गौशाला में वर्तमान में 125 से अधिक गायें संरक्षित है।

गौशाला

राम चमक रहे भानु समाना

संघ विवरणिका

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

केन्द्रीय कार्यालय : 'समता भवन' आचार्य श्री नानेश मार्ग, गंगाशहर, नोखा रोड़, बीकानेर-334401 (राज.)
E-mail: ho@sadhumargi.com, Visit us: www.sadhumargi.com
sadhumargi